VOL- VII ISSUE- III MARCH 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से किन्नर समुदाय

प्रा.परमेश्वर माणिकराव वाकडे
एम.ए, एम.एड, हिंदी (सेट), शिक्षणशास्त्र (सेट),
एम.ए. इंग्रजी,
सहयोगी प्राध्यापक
डॉ.एस.एस.एम.प्रतिष्ठाण कॉलेज आफ एज्युकेशन,अहमदपुर

'किन्नर' जिसे अक्सर 'हिजड़ा' शब्द से संबोधित किया जाता है। किन्नर का अर्थ किन्नर हिंदी के दो शब्दों 'की' और 'नर' से मिलकर बना है। जिनकी योनि और लिंग की आकृति पूर्णत: मनुष्य की नहीं मानी जाती है। ट्रांसजेंडर अंग्रेजी के दो शब्दों 'ट्रांस' और 'जेंडर' से मिलकर बना है। जिसका अर्थ जेंडर से परे वे सभी लोग जो समाज द्वारा बनाए गए। 'आदमी' और 'औरत' की दो ढांचों से परे है। भारतीय समाज के रीति-रिवाजों एवं परंपराओं ने सदियों से किन्नर समुदाय का शोषण किया है। उनकी जैविक संरचना से लेकर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक संरचना की पहलुओं से वह दूर्लक्षित एवं प्रताड़ित रहा है। समाज में मनुष्य की पहचान उसके सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर ज्यादातर टिकी होती है। जो व्यक्ती सामाजिक, आर्थिक स्थिति से मजबूत है वह समाज में अपना रुतबा रखता है, जो व्यक्ती सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति से मजबूत नहीं वह समाज में दयनीय स्थिति प्राप्त करता है। इस दृष्टि से तो किन्नर समुदाय की कोई गिनती ही नहीं होती है। वह तो केवल पशु या खिलौना रह जाता है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, वह समाज में रहना चाहता है। समाज का निर्माण एक-दुसरे से जुडाव, समान भाव-भावनाएं, घर-परिवार, रीति -रिवाज, परंपराएं, संस्कार, विचारों के आदान-प्रदान से होता है। किन्नर है कि उन्हें इससे अलग देखा जाता है। वे केवल शुभ समारोह में नाच-गाने तक ही सीमित है। वह अपनी उपजीविका नाच गाने और भीख मांग कर ही पूरी करते हैं। रेल्वे स्थानक, बस स्टैंड, बाजार और आम रास्तों पर किन्नर ताली बजाते हुए, घिनौनी करतुत करते हुए नजर आता है। आम आदमी इनसे अनदेखा कर बचकर निकलने का प्रयास करता है।

एक व्यक्ती अपने सुख-दूख: अपने समाज में बांटता है। कुछ घटनाएं ऐसे सामने आती है, जिसमें सारा समाज साथ रहता है। वह जो भी कुछ रीति-रिवाज, परंपराएं निभाता है उसे संस्कारोसे जोडा जाता है। उसकी हर कृति समाज कि मान्यताओं से जुड जाती है। यह सब वह आत्मविश्वास पूर्वक और आधिकारिक रूप में निभाता है। इससे बिलकुल विपरित है किन्नर। ना कोयी सामाजिक बंधन, ना रीति-रिवाजो , परंपराएं , संस्कारोंकी जरूरत। अगर कुछ होता भी है, तो वह किन्नरों का अपना अनुशासन। अन्य समाज की तरह वह यह बाते निभाना भी चाहे, तो वह आधिकारिक रूप से निभा नहीं पाते है। वह आत्मसम्मान ही नहीं होता, जो सामान्य व्यक्ती में होता है।

समाज की बुनियाद होता है परिवार। जिसमें माता-पिता, पति-पत्नी, बच्चे यह सब बाते महत्व रखती है। परिवार में सबका एक ही हेतू होता है। उसी उद्देश्य को लेकर परिवार चलता है। माता- पिता अपने बच्चों के लिए, तो बच्चें अपने बुढे माता पिता के लिए जुडे रहते है। ऐसे समान उद्देश वाले परिवार से बनता है समाज। किन्नरों का तो परिवार ही नही होता। कुछ मिलकर साथ होते है, पर कोयी उदेश्य न होने के कारण परिवार बंधकर नही रह पाता। चाहकर भी वह आपस में ब्याह नही कर पाते है। चाहकर भी वह अनाथ बच्चों को अपना मातृत्व-पितृत्व दे नहीं पाते है। सवाल खडा होता है, सामाजिक मान्यताओं का। बडा होकर इन्हे कौन अपनायेगा। आम समाज में अलग-अलग त्योंहार, उत्सव मनाएं जाते है। समाज के हर व्यक्ती का उसमें योगदान होता है। इसमे किन्नरों का अगर कुछ

होता है, तो वह नाच गाना, ताली बजाना, भिखं मागना। शादीयोंमें बडे लोगो के घर जाकर नाच गाना करना। वह आम व्यक्ती की तरह त्योंहारों, उत्सवों मे सहभागी हो ही नही सकते। किन्नरों को समाज में यह अनुमती ही नही है।

लिंग भेद के आधारपर स्त्री या पुरूष खुदकी एक पहचान होती हैं। उस पहचान को वे अलग अंदाज में पेश करता है। मुंछों पर हाथ घुमाना, सीना तान के चलना, महिलाएं अपनी अदाएं पेश करती है। किन्नर की अपनी पहचान न स्त्री ना पुरूष। यह बाते जब किन्नर करता है तब वह घिनौनी करतुते ही रह जाती है। समाज की धार्मिक, सामाजिक जगहोंपर, मंदिरों मे उनका आना-जाना वर्जित है। वे पाठ पुजा अपने घर पर ही करते है। शिक्षा का अभाव होने के कारन अनेको अंधश्रध्दाओं मे जीते है। शासकिय योजनाओं के लाभ से वे सदैव दूर रहते है। किन्नर समुदाय सामाजिक दृष्टी से पुरी तरह दुर्लक्षित है। वह सदियोंसे शोषित रहा है। उसे समाज मे कोयी पद प्रतिष्ठा नहीं है। वह समाज का मनोरंजन का साधन भर है।वह आम आदमी की तरह जी नहीं पाता। वह अपने अधिकारों, अपने अस्तित्व से भी अनभिज्ञ है। वह जीता है केवल पेट के लिये ही।

जब बात पेट की आती है, तो अक्सर हम यह सुनते आये है 'भगवान ने अगर जीवोंको पेट दिया है, तो उसके खाने का भी इंतजाम किया है। यह बात सामान्य जीवों के स्तरपर ठीक है। पर मनुष एक अलग जीव है। उसका एक परिवार है, समाज है। जिससे उसके पेट के साथ कितनी सारी बाते जुड जाती है, जो जरूरतों मे तबदील होती है। इन जरूरतों को पुरा करने के लिए मनुष्य दिन-रात मेहनत करता है, और अपने परिवार का पेट भरता है। किन्नरों का अपना परिवार न होने की वजह से वह अलग-थलग रह जाता है। आम व्यक्तीयों की तरह ना उसे नौकरीयों पर रखा जाता है , न ब्यापार में । भिंख मांगकर , नाच गाने, ताली बजाना यही उसके उपजीवीका के साधन रह जाते है। व्यक्ती का अस्तित्व समाज में उसके आर्थिक स्थिती पर तय होता है। जीतनी जिसकी आर्थिक स्थिती मजबुत उतना वह समाज मे प्रतिष्ठीत होता है। इस दृष्टी से किन्नर समुदाय आम आदमी से कोसों दूर है।

किन्नरों को सामाजिक तौर पर सहजतासे लेना चाहिए। उन्हें समाज के घटक के रूप में स्वीकार करना चाहिए, ताकि वे सामान्य जीवन जी सके। उन्हें शादी, घर परिवार बसाने में दिक्कत न हो। वे बच्चों को पाल सके। उन्हें सामाजिक त्योंहार, उत्सव में सहभागी होने में सहजता महसुस हो।उनका मनोविज्ञान जो सदीयों से सहते आये है, उनमें बसी नकारात्मता, उदासीनता को निकालना चाहिए। जीवन के प्रति प्रेरित करते हुये उन्हें समाज प्रवाह में लाना होगा। उन्हें चाहिए की खुद भी उस मानसिकतासे निकलकर सामान्य जीवन जीये। अपने हक्क और अधिकार समझे जाने।आजकल किन्नर अलग अलग जगहोंपर उंचे पद पर कार्य कर रहे है। पत्रकारिता, सीनेमा, राजनीति, साहित्य, उद्योग, और अपने समाज के लोगों को न्याय दिलाने, हक्क, अधिकार दिलाने के लिये सामाजिक प्रयास कर रहें है। उदा.पींकी शेख यह एक लेखक, समाज सुधारक एवं राजनेता है। जो अपनेसमाज के लिए लड़ रही है।

किन्नरों के अंदर जो विविध प्रकार की प्रतिभाएं भरी पड़ी है, उनका इस्तेमाल समाज और राष्ट्र हित में किया जाना चाहिए । ताकि वे समाज की मुख्यधारा में जुड़ने में आसानी पा सके। किन्नरों में ना केवल नाच गाना अपितु अलग अलग कलाएं जैसे फैशन डिजाइनिंग सौंदर्य विशेषज्ञा के साथ-साथ शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में महारत हासिल है,जिसका समाज हित में उपयोग किया जाना चाहिए।उनकी पहचान उनकी प्रतिभा और योग्यता के बल पर आंका जाना चाहिए नकी उनके शरीर की कमियों के आधार पर। इनको आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाया जाना चाहिए।

किन्नर समुदाय की दयनीय स्थिति को देखकर भारत सरकार द्वारा 19 जुलाई 2016 ट्रांसजेंडर पर्सन्स (प्रोटेक्शन ऑफ राइट्स) बिल 2016 को मंजूरी दे दी। भारत सरकार की कोशिश इस बिल के जरिए एक व्यवस्था लागू करने की है, जिससे किन्नरों को भी सामाजिक जीवन, शिक्षा और आर्थिक क्षेत्र में आजादी से जीने के अधिकार मिल सके। हमारे देश में ऐसे लोगों को सामाजिक कलंक के तौर पर देखा जाता है। इनके लिए काफी कुछ किए जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ-

1. भारतीय साहित्य एवं समाज में तृतीय लिंगी विमर्श- अमन प्रकाशन ,कानपुर
2. थर्ड जेंडर' समुदाय को केन्द्रित जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका का 'थर्ड जेंडर विशेषांक' प्रकाशित.

3. (http://www.jankritipatrika.com/) **अक्टूबर 16, 2015**
4. http://www.pakhi.in/may_11/mimansa_jeevantali.php
5. Chettiar, "The status of hijras in civil society: a study of the hijrasingreater Mumbai," Ph.D. Dissertation, College of Social Work Nirmala Niketan, Mumbai, 2009.
6. संपा. डॉ. एम. फिरोज अहमद, वाङ्ग्मय(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका),खंड-तीन थर्ड जेंडर-कथा आलोचना. पृष्ट-71